# xsg o tkS vuqHkkx
# ikS/k iztuu ,oa vuqokaf'kdh foHkkx
# pkS/kjh pj.k flag gfj;k.kk d`f"k fo'ofo|ky;] fglkj

## xsgw mRikndrk dks fy, vDrqcj&uoEcj ekg dh lykg

### fdLeksa dk pquko

हमे ाा उन्नत नई तथा क्षेत्र वि ोष के लिए सिफारि ा की गई किस्मों का चयन करना चाहिए। बीज साफ, स्वस्थ, खरपतवारों के बीजों से रहित होना चाहिए। सिकुड़ें छोटे एवं कटे–फटे बीजों को निकाल देना चाहिए।

1- vkSlr ls vf/kd iSnkokj okys fty (djuky] dq:{ks=] dSFky] Qrsgkckn] fljlk½:– डब्ल्यू.एच.1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी.डब्ल्यू. 88

2- vkSlr iSnkokj okys fty

(i) ;equkuxj] ikuhir] thUn] lksuhir:– डब्ल्यू एच.1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी.डब्ल्यू. 88, डब्ल्यू एच. 542

(ii) fglkj] egsUnzx<] jsokM+h

(अ) सिंचित भूमि के लिए – डब्लयू. एच. 1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी. डब्ल्यू. 88

(ब) कम सिंचाई वाली भूमि के लिए – सी. 306, डब्ल्यू एच. 1142, डब्लयू. एच. 1080, डब्लयू एच. 1025

3- vkSlr ls de iSnkokj okys fty

(i) vEckyk] iapdwyk

(अ)सिंचित भूमि के लिए – डब्लयू. एच. 1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी. डब्ल्यू. 88

(ब)कम सिंचाई वाली भूमि के लिए – डब्ल्यू एच. 1142, डब्लयू. एच.1080, डब्लयू एच. 1025

(ii) jksgrd] >Ttj] fHkokuh

(अ)सिंचित भूमि के लिए – डब्लयू. एच. 1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी. डब्ल्यू. 88

(ब)कम सिंचाई वाली भूमि के लिए – डब्ल्यू एच. 1142, डब्लयू. एच.1080, डब्लयू एच. 1025

(स)कल्लर भूमि के लिए – के.आर.एल. 210

(iii) Qjhnkckn] iyoy] eokr] x#xko%

(अ)सिंचित भूमि के लिए – डब्लयू. एच. 1105, एच.डी. 3086, एच.डी. 2967, डी.बी. डब्ल्यू. 88

(ब)कम सिंचाई वाली भूमि के लिए – डब्ल्यू एच. 1142, डब्लयू. एच.1080, डब्लयू एच. 1025

(स)कल्लर भूमि के लिए – के.आर.एल. 2010

ukV % ihyk jrqvk iHkkfor mÙkj iohZ {ks= esa fdlku HkkbZ ih-ch- MCY;w 343] ,p-Mh- 2851] cjcV] lqij] Mh-ch- MCY;w 17] MCY;w- ,p- 147] MCY;w] ,p- 711 bR;kfn uk mxk;sA D;ksafd ;s fdLesa ihyk jrqvk ds vR;ar jksxxzkgh gSA blls ihys jrqvk dk Qyko Hkh ugha gksxkA

## fctkbZ dk le; rFkk cht dh ek=k

| mRiknu fLFkfr | chtkbZ dk le; | cht nj ¼fd-xzk-@,dM½ |
|---|---|---|
| सिंचित व समय पर बीजाई | नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा | 40–45 |
| वर्षा आधारित व कम पानी | अक्टूबर का आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह तक | 50 |

- लवण प्रभावित मृदा में अधिक पैदावार लेने के लिए बीज की मात्रा सामान्य मृदा की अपेक्षा 25 प्रति ात अधिक डालनी चाहिए।
- छिड़काव विधि द्वारा बिजाई करने पर अच्छी पैदावार लेने के लिए बीज की मात्रा 50 किलो प्रति एकड़ प्रयोग करें।

## cht mipkj%

- दीमके से बचाव के लिए 60 मि.ली. क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. या 200 मि. ली. इथियोन (फोस्माईट 50 प्रति ात ई.सी.) को पानी में मिलाकर 2 लीटर घोल बनाकर 40 किलोग्राम बीज को उपचारित करें।
- खुली कांगियारी व पत्तियों की कांगियारी से बचाव के लिए बैवस्टिन या वीटावैक्स 2 ग्राम या 1 ग्राम टैब्यूकोनाजोल (रैक्सिल) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- जैविक खाद उपचार के लिए चार पैकेट एजोटोबैक्टर व चार पैकेट फास्फोरस टीका (पी.एस.बी.) प्रति 40 किलो बीज का प्रयोग करें।

## fctkbZ fof/k%

गेहूँ की बिजाई बीज एवं उर्वरक ड्रिल से करें। बीज की गहराई लगभग 5 से.मी. एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से.मी. होनी चाहिए। धान–गेहूँ फसल चक्र वाले क्षेत्रों में गेहूँ की बीजाई जीरो बीज व उर्वरक म ीन से कर सकते हैं।

## [kkn dh ek=k

- मिट्टी की जांच के अनुसार संतुलित खादों का प्रयोग करें।
- सिंचित दि ाा में क्रम ाः शुद्ध नत्रजन, फास्फोरस, पोटा ा की मात्रा 60:24:12 कि.ग्रा. प्रति एकड़ डालें। इसके लिए 50 कि.ग्रा. डी.ए.पी. तथा 110 कि.ग्रा. यूरिया (अथवा 150 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट तथा 130 कि.ग्रा. यूरिया ), 20 कि.ग्रा. म्यूरेट आफ पोटा ा प्रति एकड़ डालें।
- नत्रजन की आधी मात्रा व अन्य खादों की पूरी मात्रा तथा 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें। नत्रजन का शेष भाग पहली सिंचाई के साथ दें।
- रेतीली जमीनों में नत्रजन की मात्रा को तीन भागों में बांट कर दें। एक तिहाई बीजाई पर, एक तिहाई पहली सिंचाई पर व शेष दूसरी सिंचाई पर दें।

## fl apkbZ

- पहली सिंचाई बिजाई के 20–22 दिन बाद ि ाखर जड़ निकलने की अवस्था पर बहुत आव यक है।

## l=d fe;k dh jksdFkke

- टुण्डु व ममनी रोगों से बचाव के लिए प्रमाणित बीज का प्रयोग करें या इसे बिजाई से पहले पानी में डालकर ममनी–रहित कर लें।
- रोगग्रस्त क्षेत्र में गेहूँ की मोल्या अवरोधी किस्म राज एम.आर. –1 बोएं।
- मोल्या प्रभावित खेतों में कार्बोफ्यूरान (फ्यूराडान 3 जी) 13 किलोग्राम प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें।
- गेहूँ की बिजाई अगेती करें व एजोटोबेक्टर, एच.टी. 54 एजोटीके से प्रति पैकेट 10 किलोग्राम की दर से बीजोपचार करें।